JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिवानी के उपन्यास मायापुरी में स्त्री–चेतना और आत्म–संघर्ष का स्वरूप

सुश्री. रूपाली करुणाशंकर मिश्रा

तथा

डॉ. हुकुमचंद जाधव

प्रस्तावना :

हमारे भारतीय समाज में स्त्री को सदैव पूजनीय तथा आदर्श स्वरूप ही माना गया है। हमें वेदों और पुराणों में यह देखने को मिलता है कि स्त्री न केवल आदर्श का रूप है, बल्कि शक्ति और जननी का भी प्रतीक है। समाज में स्त्रियों को अपने ही अधिकारों तथा अपनी ही रक्षा के लिए स्वयं ढाल बनकर सदैव खड़ा रहना पड़ता है। स्त्री–केंद्रित उपन्यासों की आवश्यकता इसलिए हुई क्योंकि वे आज की स्त्रियों की वास्तविक स्थिति को प्रतिबिंबित करते हैं। इसी स्थिति को लेखिका शिवानी (गौरा पंत) ने अपने उपन्यासों में सशक्त रूप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। उनका उपन्यास मायापुरी इसका उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें स्त्रियों के जीवन की सच्चाई, उनके त्याग, बलिदान और उनकी त्रासदी का जीवंत चित्रण किया गया है।उपन्यास की नायिका शोभा के माध्यम से लेखिका ने यह दर्शाया है कि स्त्री अपने परिवार, समाज और परंपरा के बीच किस प्रकार आत्मसंघर्ष करती हुई भी मर्यादा और संस्कारों का निर्वाह करती है।

सारांश:

शिवानी ने मायापुरी में स्त्री के विभिन्न रूपों के साथ-साथ ‘लड़की होना ही एक अपराध है’ जैसी सामाजिक धारणा का अत्यंत सफल चित्रण किया है। उन्होंने स्त्री को मानसिक बंधनों से मुक्त करने का सराहनीय प्रयास किया है। आज के आधुनिक काल में भी यह उपन्यास अत्यंत प्रासंगिक है। लेखिका ने शोभा की माँ के माध्यम से मिठ्ठू के लिए यह बातें कही हैं कि यदि मिठ्ठू बाल कटवाता है तो माँ उसे समझाती है और कहती है–“छि! जो जनेऊ से पहले बाल कटवाता है, वह अगले जन्म में लड़की बनता है।”लड़की बनने के भय से सहमकर, मिठ्ठू ने माँ के कंधे से मुँह भी छुपा लिया।[1]

जहाँ हमें प्राचीन काल में स्त्रियों के प्रति अत्यधिक आदर और सम्मान देखने को मिलता है, वहीं आज हमारे समाज में वैसी भावना बहुत कम दिखाई देती है। हमारी भारतीय ज्ञान-परंपरा के अंतर्गत विभिन्न आदर्श रूपों के माध्यम से स्त्री के स्वरूप को उजागर किया गया है। स्त्री के मनोबल से लेकर उसके गुणों की प्रशंसा तथा उसके महत्व का उल्लेख हमें

वेदों और पुराणों में स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है।आज के साहित्य में भी स्त्री के स्वरूप का अध्ययन किया जा रहा है। स्त्री के अवगुणों से लेकर उसके चरित्र तक की झलकियों के माध्यम से आधुनिक स्त्री का कठोर यथार्थ हमारे सामने आता है। इन्हीं यथार्थों को प्रकट करने वाली एक सशक्त लेखिका शिवानी जी हैं, जिन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्रियों की दयनीय अवस्था से लेकर उनकी वर्तमान स्थिति का अत्यंत सफल चित्र प्रस्तुत किया है।

उद्देश्य:

1. मायापुरी उपन्यास में स्त्री–चेतना के स्वरूप का अध्ययन करना।
2. उपन्यास की नायिका 'शोभा' के माध्यम से स्त्री के आत्म–संघर्ष और त्याग का विश्लेषण करना।
3. भारतीय ज्ञान–परंपरा और आधुनिक स्त्री–यथार्थ के बीच के विरोधाभास को स्पष्ट करना।
4. पूँजीवाद, पारिवारिक बंधनों और सामाजिक मान्यताओं के कारण स्त्री–जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को उजागर करना।

जैसे हमारे रामायण में माता सीता के आंतरिक सौंदर्य और वात्सल्य-भावना को जीवंत रूप में चित्रित किया गया है, उसी प्रकार आज की स्त्रियों में परंपरा और रूढ़ियों को निभाने की भावना बहुत कम दिखाई देती है। आधुनिक स्त्रियों की स्थिति यह है कि उनकी स्वतंत्रता का हनन हो रहा है और उनका स्वरूप दिन-प्रतिदिन जटिल होता जा रहा है।स्त्रियों के मान-सम्मान से लेकर उनके चरित्र की परिभाषा भी धीरे-धीरे बदल रही है। हमारी भारतीय ज्ञान-परंपरा के वेदों और उपनिषदों में स्त्रियों को देवी-स्वरूप माना गया है, किंतु अनेक सामाजिक कारणों के परिणामस्वरूप उनके स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देता है। आज समाज में स्त्रियों को देखने का दृष्टिकोण ही बदल गया है। जहाँ भारतीय ज्ञान-परंपरा के अंतर्गत स्त्रियों को आत्मसम्मान का सर्वोच्च स्थान दिया गया था, वहीं आज की स्त्रियों को अपने ही आत्मसम्मान के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है।

ऋग्वेद में स्त्री को "समाज की धुरी" और "ज्ञान व शक्ति की जननी" बताया गया है। **2** (ऋग्वेद **2.41.17**) वही लेखिका शिवानी गौरा पंत जी ने अपने साहित्य और उपन्यासों के माध्यम से स्त्री-दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, जो आधुनिक स्त्रियों की स्थिति का स्पष्ट लेखा-जोखा है। उन्होंने दिखाया है कि भारतीय ज्ञान-परंपरा में स्त्री को देवी-स्वरूप तो माना गया है, किंतु वास्तविक जीवन में उसे संघर्ष और दुःख ही सहने पड़े हैं। आदर्श और यथार्थ के बीच यह अंतर सदैव बना रहा है, और इसी विरोधाभास को लेखिका शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में सशक्त रूप से उजागर किया है।

लेखिका शिवानी जी ने मायापुरी उपन्यास में सशक्त स्त्री पात्र 'शोभा' के माध्यम से कथा को आगे बढ़ाया है। पुरुष पात्र सतीश के एकतरफा प्रेम में पीड़ा सहते हुए भी वह परिवार में अपनी वेदना प्रकट नहीं करता। अपनी भावनाओं का त्याग और बलिदान करके वह कथा को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार लेखिका ने स्त्री के सहनशील, त्यागमयी तथा संवेदनशील स्वरूप

का अत्यंत प्रभावी चित्रण किया है।

रामायण में माता सीता को अग्निपरीक्षा देनी पड़ी, जिससे यह स्पष्ट होता है कि देवी स्वरूप मानी जाने वाली सीता को भी अपनी पवित्रता सिद्ध करने के लिए परीक्षा से गुजरना पड़ा। यथार्थ यह है कि स्त्री को अपने सम्मान की रक्षा और सामाजिक स्वीकार्यता के लिए न केवल मानसिक, बल्कि विविध प्रकार की कठिनाइयों और संघर्षों का सामना करना पड़ता है।उसी प्रकार वनवास-प्रसंग में माता सीता रामजी के साथ वन जाने के लिए तत्पर हो जाती हैं और अपने पत्नीत्व धर्म का निर्वाह करती हैं। यह प्रसंग दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान-परंपरा का मूल यह है कि स्त्री केवल गृहिणी ही नहीं, बल्कि धर्म और मर्यादा की रक्षक भी है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में सीता माता को त्याग, धैर्य, पतिव्रत और धर्मपालन का आदर्श माना है।रामचरितमानस से यह स्पष्ट होता है कि स्त्री को जीवन में विविध प्रकार की समस्याओं और संघर्षों का सामना करना पड़ता है। माता सीता का वनगमन, रावण द्वारा हरण, अशोकवाटिका में प्रतिकूल परिस्थितियों को सहना तथा अंत में अग्निपरीक्षा – ये सभी प्रसंग इस तथ्य को उजागर करते हैं कि स्त्री केवल त्याग और धैर्य की मूर्ति नहीं, बल्कि संघर्षशील जीवन का प्रतीक भी है।

इस उपन्यास में समाज की कटु सच्चाई को उभारते हुए यह दिखाया गया है कि मायके में बेटी के स्वास्थ्य पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया जाता, परंतु वही बेटी जब बहू बनकर ससुराल आती है तो उससे पूर्णतः स्वस्थ और सक्षम होने की अपेक्षा की जाती है। मायापुरी उपन्यास में इसी सामाजिक मान्यता का गहन और मार्मिक चित्रण किया गया है। लेखिका ने स्त्रियों के स्वास्थ्य पर अत्यंत मार्मिक और व्यंग्यपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। साथ ही, विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों और पारिवारिक बंधनों के बीच स्त्री अपने अस्तित्व और इच्छाओं का त्यागकर जीने के लिए विवश दिखाई देती है।

शोभा के प्रति सतीश के हृदय में अत्यन्त गहरा प्रेम उमड़ता है। यह भाव समाज और परिवार के अन्य लोगों को भले ही न दिखाई दे, किन्तु सतीश की माता की दृष्टि से इसे छिपाना सम्भव नहीं है। उपन्यास में यह द्वन्द्व स्पष्ट दिखाई देता है कि शोभा और सतीश, दोनों ही अपनी व्यथा और हृदय की गहनतम पीड़ा को एक-दूसरे से कहने का साहस नहीं जुटा पाते। परिणामस्वरूप सतीश अपने मन के भावों को दबाकर सावित्री से विवाह करने के लिए तैयार हो जाता है। वह अपनी माता से कहता है–"तुम्हें वचन देता हूँ अम्मा, मैं कुछ नहीं कहूँगा।उसकी माता मन ही मन जान गई थी कि उसने पुत्र के आनंदोपवन को स्वयं सुखा डाला है। अब उस अरण्य में सुख की आशा आकाशकुसुम-चयन मात्र है।"**3** सतीश की माँ अब अपने शैवालों से भरे घर में कोई आनंद की भावना अनुभव नहीं कर पाती, क्योंकि वह जान चुकी है कि अपने ही पुत्र की खुशियों को कितनी सहजता से उसने अपने स्वार्थ की लालसा में बलि चढ़ा दिया है। यहाँ लेखिका ने एक वचनबद्ध बेटे के संस्कारों को उभारते हुए यह भी दर्शाया है कि माँ और पुत्र का रिश्ता देखते-देखते वात्सल्य से स्वार्थ की डोर में कैसे बँध जाता है, और उस बंधन को दोनों जानते हुए भी नहीं खोल पाते। आज भी हमारे समाज में ऐसी ही कुण्ठाएँ व्याप्त हैं, जिनके कारण रिश्तों की बलि दी जा रही है।सतीश कहता है कि शोभा या किसी अन्य लड़की के विषय में विवाह हेतु वह कभी विचार नहीं करेगा। इस प्रकार उसके जीवन का निजी प्रेम त्याग और समझौते की भेंट चढ़ जाता है।

सतीश अपने विवाह से संतुष्ट नहीं था, परंतु उसे यह ज्ञात था कि सावित्री से विवाह करने अथवा न करने – दोनों ही स्थितियों में उसके परिवार को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। जिन कठिनाइयों और कर्ज से सतीश का परिवार उभरा था, उसका कारण केवल सतीश के पिता के मित्र तिवारी जी थे। उनके कारण यह विवाह-प्रस्ताव सामने आया और अनिवार्यता में बदल गया। लेखिका ने यह दर्शाया है कि पूँजीवादी वर्ग यदि कुछ ठान ले तो निर्धन वर्ग की मजबूरी बन जाती है।शोभा सतीश के घर आने पर परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेती है। परंतु अपने भाई-बहनों और माँ के लिए दिन-रात सोचती रहती है। वह जानती है कि उसका परिवार दो वक्त की रोटी के लिए कितना संघर्ष करता है। तन से वह सतीश के घर में रह रही है, किंतु मन से अपने परिवार के साथ है। शोभा की माँ के आग्रह पर वह सतीश के घर पढ़ने जाती है। घर से बाहर कदम रखते ही वह अपने भाई-बहनों से हमेशा के लिए दूर हो जाती है। इसी पीड़ा से उसकी माँ पागल हो जाती है और शोभा के अंतिम दर्शन के बाद ही अपने प्राण त्याग देती है।

सतीश, परिस्थितियों से बँधा होने के बावजूद, इशारों में शोभा से विवाह का प्रस्ताव रखता है, किंतु शोभा अपने संस्कारों और कर्तव्य की मर्यादा निभाते हुए उसे अस्वीकार कर देती है। वह कहती है—“जिस थाली में खा रहे हैं, उसमें छेद नहीं किया जा सकता।”लेखिका ने शोभा के संस्कार और पवित्रता को बहुत सुंदर रूप से प्रस्तुत किया है।जब सतीश का विवाह तय हो जाता है, तब तिवारी जी को यह आशंका होती है कि शोभा की उपस्थिति कहीं इस विवाह में विघ्न न डाल दे। वह कहता है—“शुभ कार्य में विघ्न डालने वालों का क्या अभाव रहता है।”**4**

इस वाक्य से और तिवारी जी की भावना से शोभा अपने भीतर गहरी ग्लानि महसूस करती है। यह अपमान उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था। परंतु परिस्थितियों की मारी होने के कारण वह केवल अपनी किस्मत को कोसती रह जाती है।समाज में स्त्रियों के आत्मसम्मान में सबसे बड़ी बाधा उनकी निर्भरता है। पुरुषप्रधान समाज में स्त्रियों के आत्मसम्मान के साथ खिलवाड़ का अत्यंत सफल चित्रण लेखिका ने किया है। मजबूरियों में किस प्रकार आत्मसम्मान की बलि देनी पड़ती है, यह मायापुरी में स्पष्ट दिखाई देता है।शोभा का विवाह न हो पाने पर वह अपने मामा के घर चली जाती है। वहाँ की परिस्थिति भी उसके लिए प्रतिकूल थी। मामी की भाषा और अशिक्षा के कारण वह अनेक कठिनाइयों से जूझती है। बच्चों के स्वास्थ्य से लेकर संस्कारों तक में लापरवाही देखने को मिलती है। लेखिका ने यहाँ यह दिखाया है कि अशिक्षित स्त्रियाँ किस प्रकार अपने बच्चों के पालन-पोषण में चूक करती हैं।रामी शोभा से कहता है—“बात असल में यह है कि बच्चे अधिक होने से दीदी कभी-कभी अपना **temper** खो देती हैं, परंतु दिल से वह बुरी नहीं हैं।”**5**

कुछ ही समय बाद शोभा को रानी जी की सेवा में काम मिल जाता है। किंतु भाग्य का लिखा कोई नहीं बदल सकता। अतीत से भागी शोभा का सामना एक बार फिर सतीश से हो जाता है। सतीश सावित्री से विवाह कर चुका है, परंतु उसका हृदय अब भी शोभा से ही प्रेम करता है। वह अपने अतीत को याद करके पछताता है और स्वीकार करता है कि उसमें अपने परिवार से लड़ने का साहस नहीं था। अंततः वह शोभा से क्षमा माँगता है, किंतु समय के खेल में सब कुछ खो बैठता है।

निष्कर्ष:

लेखिका ने सावित्री के माध्यम से आधुनिक स्त्रियों की सच्चाई को उजागर किया है, जो अपने आत्मसम्मान और चरित्र को पूँजीवाद के दबाव में खो देती हैं। दूसरी ओर शोभा जैसी स्त्री के माध्यम से यह संदेश दिया है कि स्त्री को अपने संस्कारों, आत्मसम्मान और परंपराओं को कभी नहीं छोड़ना चाहिए।शिवानी का मायापुरी केवल एक उपन्यास नहीं, बल्कि स्त्री–जीवन का दर्पण है। इसमें आदर्श और यथार्थ के बीच गहराता हुआ द्वन्द्व, स्त्री की सामाजिक स्थिति, आत्मसम्मान तथा परिवार और पूँजीवाद के दबाव का मार्मिक चित्रण किया गया है। शोभा का चरित्र त्याग, संस्कार और संघर्षशीलता का अद्भुत प्रतीक है।भारतीय ज्ञान–परंपरा में स्त्री को देवी स्वरूप माना गया, किंतु आधुनिक यथार्थ यह दर्शाता है कि स्त्री को अपने अस्तित्व और सम्मान की रक्षा के लिए निरंतर संघर्ष करना पड़ता है। शिवानी जी ने मायापुरी के माध्यम से इस विरोधाभास को अत्यंत सशक्त रूप से उजागर किया है।

संदर्भ–सूची

1. शिवानी, मायापुरी, राजकमल प्रकाशन, 1961, पृ. 11
2. शिवानी, मायापुरी, राजकमल प्रकाशन, 1961, पृ. 80
3. शिवानी, मायापुरी, राजकमल प्रकाशन, 1961, पृ. 77
4. शिवानी, मायापुरी, राजकमल प्रकाशन, 1961, पृ. 110
5. तुलसीदास, रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, संस्करण–प्रकाशन।
6. ऋग्वेद, मण्डल 2, सूक्त 41, ऋचा 17।
7. पुराण साहित्य – वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड।
8. भारतीय ज्ञान–परंपरा पर विभिन्न शोध–संदर्भ।